भाषा और साहित्य के बिच का अंतर

फाल्गुनिबहन नटवरलाल पटेल
सरकारी आदर्श निवासी शाला (कन्या), खेडब्रह्मा

१. प्रास्ताविक

भाषा वैज्ञानिक हमें शब्द देते हैं । लेकिन साहित्यकार उन शब्दों कों चुनकर एक रचना को जन्म देते है । भाषा वैज्ञानिक वाक्य संरचना का ज्ञान कराते है, लेकिन साहित्य वाक्य का अर्थ सुरक्षित रखते हुए रचना में लालित्य पैदा करते है ।

भाषा और साहित्य एक ही सिक्के के दो पहलू है । भाषा है तो साहित्य है । और जब साहित्य होता है तब भाषा स्वतः ही विकासमान होती है । भारत देश विविधता से भरा हुआ देश है । और प्राचीन काल से भारत में भाषा और साहित्य में वैविध्यता दीखती है । भारत के बंधारण में 22 भाषाओं को मान्यता प्राप्त हुई है । और ये 22 भाषाओं में कई तरह के साहित्य की रचना की गई है ।

२. भाषा क्या है?

भाषा शब्द संस्कृत के 'भाष' धातु से बना है । संस्कृत में भाष का अर्थ होता है बोलना । इस प्रकार जिसे हम बोलते है, वह भाषा है । भाषा मुख से उच्चारित होनेवाले शब्दो और वाक्यों आदि का वह समूह है जिनके द्वारा मन की बात बतलाई जाती है ।

भाषा मुख्य रुप से दो प्रकार के होते है । मौखिक भाषा और लिखित भाषा । भाषा के जिस रुप से हम अपने विचार एवं भाव बोलकर प्रकट करते है अथवा भाव सुनकर ग्रहण करते है उसे मौखिक भाषा कहते है । जब भाषा के जिस रुप से हम अपने विचार एवं भाव पढ़कर ग्रहण करते है उसे लिखित भाषा कहते है । प्लेटोने स्रोकिस्ट में विचार और भाषा के संबंध में लिखते हुए कहा है कि विचार और भाषा में थोड़ा ही अंतर है । सामान्यतः भाषा को वैचारिक आदान प्रदान का माध्यम कहा जा सकता है । भाषा आभ्यतर अभिव्यक्ति का सर्वाधिक विश्वसनीय माध्यम है ।

३.साहित्य क्या है?

"सहितस्य भावः साहित्यम्" जिसमें सहित का भाव है उसे साहित्य कहते है । इसके विषय में संस्कृत साहित्यकारोंने जो सम्मतियाँ दी है;

'सहित' शब्दो से साहित्य की उत्पत्ति है – अतएव, धातुगत अर्थ करने पर साहित्य शब्द में मिलन का एक भाव दृष्टिगोचर होता है । वह केवल भाव का भाव के साथ, भाषा का भाषा के साथ, ग्रन्थ का ग्रन्थ के साथ मिलन है । महात्मा गाँधी के अनुसार "यदि हमें जीवित रहना है और सभ्य की दौड़ में अन्य जातियों की बराबरी करना हौ तो हमें श्रमपूर्वक वड़े उत्साह से सत्यसाहित्य का उत्पादन और प्राचीन साहित्य की रक्षा करनी चाहिए ।"

४. भाषा और साहित्य के बीच में अंतर और साम्यता

भाषा और साहित्य एक सिक्के के दो पहलू है । भाषा साहित्य की बुनियादी इकाई है । दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि भाषा साहित्य बनाता है । भाषा के लेखकों द्वारा किसी विशेष भाषा में कतामों के सृजन के द्वारा साहित्य का उत्पादन किया जाता है । दूसरी तरफ एक भाषा मुखर ध्वनियाँ के माध्यम से विचार की अभिव्यक्ति का एक तरीका है । भाषा और साहित्य के बीच यह मुख्य अंतर है इसमें कई साहित्य है क्योंकि भाषाएँ है । ऐसा कहा जा सकता है कि साहित्य के कई रुप हैं इनमें से प्रत्येक रुप को साहित्यिक रुप कहा जाता है । विभिन्न साहित्यिक रुप कविता, गद्य, नाटक, महाकाव्य, मुक्त कविता, लघुकथा, उपन्यास और जैसे है । इनमें से प्रत्येक साहित्य रुप को उस भाषा के साथ लादेन है जिसमें लिखा है । संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि पूरे साहित्य को उस भाषा के द्वारा निर्मित किया जाता है जिसमे वह लिखा गया है ।

भाषा अभिव्यक्ति की विधि है, जबकि साहित्य इस प्रकार के अभिव्यक्तियों का संग्रह है उपरोक्त उल्लेरित रुपों में है । किसी भी साहित्य को उस भाषा की शुद्धता के आधार पर समृध्ध या गरीब माना जा सकता है जिसमें विशेष साहित्य बनाया जाता है । किसी विशेष भाषा के विशेषज्ञ उस विशेष भाषा में उच्च गुणवत्ता वाले साहित्य का उत्पादन करते है। भाषा है तो साहित्य है और जब साहित्य होता है तब भाषा खतः ही विकासमान होती है ।

५. भाषा और साहित्य का स्वरुप

भाषा के माध्यम से अपने अंतरंग की अनुभूति अभिव्यक्ति करानेवाली ललित कला 'काव्य' तथा 'साहित्य' कहलाती है। साहित्य हरेक भाषा में विकसीत हुई है ।

भाषा के तीन रुप मिलते है । बोलियाँ, परिनिष्ठित भाषा और राष्ट्रभाषा । जिन स्थानीय बोलियों का प्रयोग साधारण समूह में होता है उस बोलि कहते है । जबकी परिनिष्ठित भाषा में व्याकरण नियंत्रित होती है । इसका प्रयोग शिक्षा, शासन और साहित्य में होता है । जब कोई भाषा किसी राष्ट्र के अंधिकांश प्रदेशों के बहुमत द्वारा बोली व समझी जाती है, तो वह राष्ट्र भाषा बन जाती है । उसके अलावा मातृभाषा जो बालक अपने परिवार से अपनाता एवं सीखता है । प्रादेशिक भाषआ जब कोई भाषा एक प्रदेश में बोली जाती है । जब राजभाषा, देश के कार्यालय, एवं राज काल के लिए बोली जाएँ । मानाक भाषा विद्वानो व शिक्षाविदों द्वारा भाषा में एकरुपता लाने के लिए भाषा के जिस रुप को मान्यता दी जाती है, वह मानक भाषा कहलाती है ।

साहित्य भावः साहित्यम् संस्कृत में साहित्य कहते है । परस्पर "सापेक्षाणां तुल्य रुपाणां युगपदेक क्रियान्वयित्वं साहित्यम्" । साहित्य में सबसे पुरानी साहित्य ऋग्वेद है । उसके बाद रामायण, महाभारत को माना जाता है । साहित्य में आधुनिक काल में नाटक आत्मकथा, काव्य, नवलकथा, जीवनवृत्तांत, पद, गरबी, कई सारे प्रकार के साहित्य की रचना की गई । कई सारे लेखक, कवियों ने साहित्य का निर्माण कीया । हरेक भाषा में साहित्य निर्माण की गति विधियाँ बढने लगी । उसके अलावा साहित्य के माध्यम से हम मानव जीवन संबंधी समस्त जानकारी प्राप्त कर सकते है । तथा उन जीवन मूल्यों का अध्ययन कर सकते है । जिन्हे आत्मसात् करके तत्कालीन समाज उन्नत बना ।

संदर्भसूचि

1. कुंवर नारायण को ज्ञानपीठ पुरस्कार Times of India. 24 Nov. 2008 Archive from the original on 5 Dec. 2012
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, (1929) पृ.51
3. Hindi language, britannica.com
4. www.wikipedia.org
5. https://hi.quora.com